Lingaraja Temple लिंगराज मंदिर

उड़ीसा का मन्दिर वास्तु शिल्पी अपने निर्माण में नित्य-नूतन परिवर्तन करता रहा। उसने मन्दिर वास्तु में क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर विकास के लिए विविध-अंगों का विकास किया। ऐसा प्रतीत होता है कि मन्दिर को वह अधिकतम ऊँचाई तक पहुँचाना चाहता था तथा इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पिष्ट से मस्तक तक ऊर्ध्वाधर रेखाओं का निर्माण करना प्रारम्भ किया। परशुरामेश्वर एवं मुक्तेश्वर मन्दिरों की सरलता शनैः-शनैः समाप्त होने लगी तथा जटिलता का संचार होने लगा। जहाँ बाढ़ पहले मात्र तीन भागों में विभाजित था वहीं अब उसे बान्धनों द्वारा पाँच भागों में विभाजित किया गया जिससे पञ्चांग मन्दिरों का विकास हुआ। तलजंघा तथा ऊपरजंघा दो-दो भागों में पृथक कर दिये गए तथा बरण्ड में गहरी लहरें बनाई जाने लगी। बाढ़ से बड़े अंश अर्थात् रथों की संख्या में भी वृद्धि हुई। त्रिरथ मन्दिर के स्थान पर पञ्चरथ, सप्तरथ, तथा नवरथ मन्दिरों का निर्माण हुआ। ये रथ-पग अपने विविध रूप में गण्डी की ऊँचाई तक बनाए गए तथा जिससे लम्बवत् रेखाओं का निर्माण हुआ। इन लम्बवत् रेखाओं के कारण सहज ही वास्तविकता से अधिक ऊँचाई का आभास होने लगा।

क्षैतिज विकास की ओर भी वास्तुकार सतत प्रयत्नशील रहा। श्री मन्दिर एवं जगमोहन के-अतिरिक्त उसी अक्ष पर दो अन्य मण्डपों का निर्माण किया जिन्हें नाट-मण्डप एवं भोग मण्डप कहा गया। इसका निर्माण भी जगमोहन की शैली में ही किया गया। वास्तुकला

Scanned with CamScanner

के इस विकसित रूप का प्रथम दर्शन भुवनेश्वर के ही लिंगराज मन्दिर में होता है। जिसे "महान मन्दिर" के नाम से सम्बोधित किया जाता है। यह मन्दिर द्वितीय चरण में पूर्ण विकसित स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। लिंगराज मन्दिर 520 x 465 के विशाल आयताकार प्रांगण में स्थित है। स्थूलकाय चहारदिवारी के चारों ओर मध्य में मुख्य प्रवेश द्वार बने है। प्रांगण के मध्य में अनेक लघु मन्दिरों का समूह है जिसे पहाड़पुर में बौद्ध विहार स्तूपों के चतुर्दिक निर्मित बौद्ध चैत्यगृहों का अनुकरण है।

लिंगराज मन्दिरों में परम्परागत श्री मन्दिर और जगमोहन के अतिरिक्त उसी अक्ष पर दो अन्य मण्डप भी बने हैं। जिन्हें नाट मन्दिर एवं भोग मन्दिर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। श्री मन्दिर एवं जगमोहन मन्दिर तो एक ही काल में निर्मित हुए किन्तु अन्य मण्डपों का निर्माण लगभग एक शताब्दी बाद हुआ।

श्री मन्दिर का शिखर सर्वाधिक आकर्षक अंग है। जिसकी ऊँचाई एवं सुन्दरता सम्पूर्ण रचना को प्रभावित करती है। पंचरथ योजना पर निर्मित लिंगराज शिखर उड़ीसा में सर्वोत्तम है। लगभग 150 फीट ऊँची वाढ़ का भागों में बंधनों से विभाजित है। तदुपरान्त शिखर निर्माण पैराबोलिक आकार में हुआ है। धरातल से शिखर की ऊँचाई 160 फीट है। जिसकी वेदी पर दो पिरदेव दो सिंहों के ऊपर विशाल आमलकशिला छत्राकार खपुरी, कलश एवं त्रिशूल है।

गण्डी के साथ रथ-पग कोकण पग अधिक ऊँचाई तक तक बने हैं। जिनसे लम्बवत रेखाओं का निर्माण होता है। कोणक-पगो एवं रथपगों के आमलगों से क्रमशः घटते हुए भूतों का निर्माण होता है। अनुरथपग मुख्य शिखर के अनुरूप ही बने हैं। जिनसे अंगशिखरों का निर्माण होता है। ये गण्डी की ऊँचाई में अवरोध नहीं वरन् प्रवाह उत्पन्न करते हैं। तथा लम्बवत् रेखाओं के कारण अधिक ऊँचाई का आभास होता है। राहापगों के चारों ओर हस्तलात्मक सिंह मूर्तियों का निर्माण इस मुद्रा में हुआ है कि जैसे वे आकाश मार्ग में उछलने ही वाले हों। उन्नतोन्मुख ऊँचाई एवं सौन्दर्यपूर्ण मूर्तिकला के अद्भुत संयोग से लिंगराज का महान शिखर सर्वत्र ख्याति प्राप्त है।

जगमोहन भी श्री मन्दिर के साथ उसी सौन्दर्यकल्पना के अनुरूप निर्मित हुआ है। यह 72' लम्बा और 56" चौड़ा है। लगभग 34' ऊँची बाढ़ पञ्चरथ एवं पंचांग है। उसके ऊपर पिरामिडकार शिखर दो खण्डों में विभाजित है। इसके ऊपर बेकी, घण्टाकार भाग आमलक शिला एवं कलश है जिसकी सम्पूर्ण ऊँचाई के लगभग 100 फीट है। अपनी विशालता एवं अलंकरण के कारण यह श्री मन्दिर का सुयोग्य पूरक प्रतीत होता है।

नाट मण्डप एवं भोग मण्डप - यद्यपि एक शताब्दी पश्चात् बने किन्तु योजना निर्माण एवं कल्पना में जगमोहन के ही अनुवर्ती हैं। इस मण्डपों को अलंकरण विहीन रखा गया है। जिनसे

Scanned with CamScanner

जिनसे सादगी का बोध होता है। चार-चार स्तम्भों पर आधृत ये मण्डप चतुर्दिक खुले हैं तथा स्तम्भों को मूर्तियों से अलंकृत भी किया गया है। मण्डपों के ऊपर पिरामिडाकार शिखर है जो गर्भगृह के अनुरूप तो है किन्तु उतने आकर्षक नहीं है।

इस प्रकार लिंगराज मन्दिर उड़ीसा के परवर्ती मन्दिरों का आधार बना तथा इस शैली का निरन्तर विकास होता रहा।